सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (7)

जन्म : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन 1899 में महिषादल, मे हुआ था। उनका पैतृक गाँव - गढ़ाकोला, मैं था।

प्रमुख रचनाएँ : परिमल, नए पत्ते, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, गीतिका, बेला, अनामिका, अणिमा (कविता संग्रह); बिल्लेसुर बकरिहा, चतुरी चमार, प्रभावती, काले कारनामे, चोटी की पकड़ (गद्य) आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। उनका संपूर्ण साहित्य आठ खंडों में 'निराला रचनावली' नाम से प्रकाशित हो चुका है। उन्होंने कुछ समय तक समन्वय और मतवाला पत्रिका का संपादन भी किया।

निधन : सन 1961 में इलाहाबाद में उनका देहांत हो गया।

साहित्यिक विशेषताएँ : कविता को नया स्वर प्रदान करने वाले निराला छायावाद के ऐसे कवि हैं जो एक ओर तो कबीर की परंपरा से जुड़ते हैं जबकि दूसरी ओर समकालीन कवियों के प्रेरणा स्रोत भी हैं। उनका यह विस्तृत काव्य-संसार ओज और माधुर्य, क्रांति और निर्माण, संघर्ष और जीवन, आशा और निराशा के द्वंद्व को अपने भीतर कुछ इस तरह समेटे हुए हैं कि वह किसी भी सीमा में बंध नहीं पाता। उनका यह निर्बंध और उदात्त काव्य - व्यक्तित्व वास्तविक जीवन और कविता में फाँक नहीं रखता। वे आपस में पूरी तरह से घुले - मिले हैं।

उषा

1. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है।

→ कविता में दिए गए निम्नलिखित उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है —

1. राख से लीपा हुआ चौका।
2. स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने।
3. बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।

2. भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
नयी कविता में कोष्ठक, विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ दे देता है, उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है। समझाइए।

→ कोष्ठक के प्रयोग से कविता में संवादात्मकता का समावेश हुआ है। ऐसा लगता है जैसे कवि पाठक से स्वयं रु-ब-रु हो रहा है। विशिष्टता को स्पष्ट करने के लिए भी कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। उपमान को स्पष्ट करने में भी कोष्ठक में लिखे शब्द अधिक सहायक हैं।

2020/7/24 14:46

Scanned with CamScanner